International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

मोहन राकेश के नाटकों में नारीवादी दृष्टिकोण

संजय कुमार
हिन्दी प्रवक्ता,
रा0व0मा0वि0–सूई (भिवानी)

शोध–आलेख सारः वस्तुतः मोहन राकेश के नाटकों में समाज का व्यापक परिदृश्य अभिव्यक्त हुआ है। उन्होंने अपने नाटकों में नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण प्रस्तुत किया है। चूंकि नारी के बिना समाज की कल्पना संभव नहीं है और आज भी हमारा समाज स्त्री को अबला और दीन समझता है, परन्तु मोहन राकेश ने अपने नाटकों में अलग–अलग ढंग से नारी के विभिन्न रूपों का प्रस्तुतिकरण किया है। उन्होंने –आषाढ का एक दिन' नाटक में भारतीय नारी की समपर्ण भावना की अभिव्यक्ति की है, वहीं दूसरी तरफ 'आधे–अधूरे' नाटक में एक आधुनिक स्वतंत्र नारी को अभिव्यक्त किया है जो पुरूष के निक्कमेपन का विरोध करती है। इसी तरह के नारी भावों का उतार–चढाव अलग–अलग नाटकों में अलग–अलग ढंग से देखने को मिलता है। प्रस्तुत शोध पत्र में मोहन राकेश के विभिन्न नाटकों के आधार पर उनके नारी चरित्रों को उजागर करते हुए नारीवादी दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला गया है।

मूलशब्द– समाज, नारी, अभिव्यक्ति, आधुनिकता, नारीवादी दृष्टिकोण, अबला, त्याग व ममता, प्रेम, स्नेह, सहानुभूति, नारी अहम्।

भूमिका– प्रत्येक साहित्यकार का यह प्रयास रहता है कि वह समाज के उपेक्षित वर्ग को अपने साहित्य में जगह देकर जनता और पाठकों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर सके। यही कारण है कि लम्बे समय से उपेक्षित नारी समाज के बारे में कई नाटकों में नारी पात्रों के माध्यम से नारी की व्यथा का चित्रण हुआ है। चूंकि एक सामान्य स्त्री बाहरी जगत से अलग रहती है, फिर भी समय में परिवर्तनवादी दृष्टिकोण के अन्तर्गत सामाजिक परिस्थितियां भी बदली हैं और नारी के जीवन व समाज पर भी सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव पड़ा है। आधुनिक नारी अबला और दीन नहीं है, बल्कि वह एक स्वतंत्र और कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली पुरूष की संगिनी है। उसे हिन्दी साहित्यकारों ने त्याग, ममता , प्रेम, स्नेह, आदि गुणों से परिपूर्ण रूप से उजागर किया है।

मोहन राकेश ने एक नाटककार होने के नाते अपने साहित्यकार के दायित्व को भली–भांति निभाया है। 'आषाढ का एक दिन' नाटक में उन्होंने आदर्श नारी की समर्पण भावना को व्यवत किया है , जबकि 'लहरों का राजहंस' नाटक में नारी के अहं भाव का पोषण किया है। उनके नाटक 'आधे–अधूरे' में एक ऐसी आर्थिक रूप से सक्षम और आधुनिक स्वतंत्र नारी को दर्शाया गया है जो अपने अधूरेपन को भरने के लिए पुरूष के निक्कमेपन का पुरजोर विरोध करती है। इसी तरह पैर तले की जमीन में साहसिक नारी को दिखाया गया है। वस्तुतः जब मोहन राकेश के नाटक प्रकाशित हो रहे थे तब हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श का स्वरूप आज जैसा नहीं था। संविधान में तो महिलाओं का बराबर का अधिकार दे दिया गया था, परन्तु हिन्दू कोड बिल पारित होने के बाद ही महिलाओं को वोट का अधिकार प्राप्त हुआ। इसके बावजूद तत्कालीन समय में सामाजिक स्तर पर नारी पिछड़ेपन का शिकार थी फिर भी मोहन राकेश ने अपने नाटकों में स्त्री–पुरूष सम्बन्धों का क्रमिक विकास प्रस्तुत किया है।

'आषाढ का एक दिन' नाटक में मोहन राकेश ने मल्लिका के चरित्र को मौलिक रूप से प्रकट किया है तथा उसकी माँ को एक भारतीय माँ के रूप में चित्रित किया है। इस नाटक में वे नारीवादी दृष्टिकोण प्रकट करने में सफल रहे हैं। इस नाटक के अन्य पात्र कालिदास, मल्लिका, प्रियंगुमंजरी और विलोम के सम्बन्ध और अहं को भी मोहन राकेश ने बढे सुन्दर और सहज ढंग से अभिव्यक्त किया है। चूंकि इस नाटक की महिला पात्र मल्लिका कालिदास के प्रेमपाश में बंधी है, फिर भी वह कालिदास की भलाई के लिए अपने प्रेम का बलिदान कर देती है। वह भावना में भावना का वर्णन करने वाली महिला है। मोहन राकेश ने लिखा है– 'मल्लिका का जीवन उसकी अपनी सम्पति है। वह उसे नष्ट करना चाहती है तो किसी को उस पर आलोचना का क्या अधिकार?'[प] नाटककार ने मल्लिका के चरित्र के माध्यम से परम्परा व आधुनिकता दोनों का सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया है। यही कारण है कि मल्लिका न तो पूरी तरह स्वतंत्र हो पाती है और न ही घर की चारदीवारी में रहकर वैवाहिक जीवन का आन्नद ले पाती है। वह केवल भारतीय नारी के कोमल स्नेहमयी एवं प्रिय रूप को ही साकार करती है। हरिण–शावक के प्रति उसका अनुराग, कालिदास में उसकी आस्था, प्रकृति से लगाव, माँ से प्यार और अपनी बेटी के प्रति उसकी उत्तरदायित्व की भावना, उसके

भारतीय नारी के चरित्र को चार चाँद लगा देती हैं। स्वयं को दुःख देकर अपने पति कालिदास को सुख देना उसके भारतीय नारी होने का पूर्ण अहसास है।

इस नाटक में दूसरी नारी पात्र अम्बिका का जीवन क्रूर वास्तविकता से परिचित है और उसका जीवन के प्रति दृष्टिकोण अधिक व्यवहारिक है। उसके चेहरे पर जो झुर्रियां हैं, वे वास्तव में उसके शरीर व आत्मा पर समय की चोट की निशानी है, जो अपनी बेटी को अभाव से बचाने के लिए सारे जीवन तिल–तिल कर जीती रही। अपनी बेटी के अधिकारों का हनन होने पर वह विलाप करते हुए तीखे व्यंग्यात्मक ढंग से अपनी बेटी को कहती है – 'लो मेघदूत की पंक्तियां पढो। इन्हीं में न कहती थी उसके अन्तर की कोमलता साकार हो उठी है। आज इस कोमलता का और भी साकार रूप देख लिया। आज वह तुम्हे तुम्हारी भावना का मूल्य देना चाहता है, तो क्यों नहीं स्वीकार कर लेती?[पप] चूंकि अम्बिका के चरित्र में नारी पर माँ का रूप भारी है, फिर भी उसने नारी का आत्मसम्मान और आत्मगौरव बचाकर रखा हुआ है।

इस नाटक का अन्य नारी पात्र प्रियंगुमंजरी है, जिसे राजसत्ता का दर्प सौन्दर्य का अभिमान एवं राजनैतिक ज्ञान की ठसक, उसके व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण रूप को प्रकट करते हैं। इस नाटक में रंगीनी तथा संगिनी अन्य राज्याश्रय प्राप्त प्रतिभावान स्त्रियां हैं जो हमेशा कुछ नया तलाशने का ढोंग करती हैं तथा स्त्री के खोखले व झूठे रूप का प्रतिबिम्ब हैं। इस तरह मोहन राकेश का नारीवादी दृष्टिकोण मध्ययुगीन है।

उनके दूसरे नाटक 'लहरों के राजहंस' में सुन्दरी का चरित्र उनके नारीवादी दृष्टिकोण को दर्शाता है। सुन्दरी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में अपनी सत्ता तथा महिला अधिकारों का बोध तथा सौन्दर्य का घमण्ड कूट–कूट कर भरा हुआ है। इस नाटक में पुरूष पात्र नंद पर सुन्दरी का प्रभाव किसी यक्षिणी से कम नहीं है। इस बात की पुष्टि नंद और सुन्दरी के संवादों से होती है। जब सुन्दरी नंद से संवाद करते हुए कहती है– 'कहते हैं, आपका ब्याह एक यक्षिणी से हुआ है जो हर समय आपको अपने जादू से चलाती है।' इसका उत्तर देते हुए नंद कहते हैं– 'इसमें झूठ क्या है?' फिर इसका उत्तर देते हुए सुन्दरी कहती है– 'झूठ नहीं है।' इसका उत्तर

देते हुए नंद कहते हैं– 'यक्षिणी हो या नहीं यह तो मैं नहीं कह सकता, पर मानवी तुम नहीं हो। ऐसा रूप मानवी का नहीं होता।'[पपप]

इस तरह मोहन राकेश के इस नाटक में नंद और सुन्दरी के संवाद इस बात को प्रकट करते हैं कि नंद पर सुन्दरी का चुम्बकीय प्रभाव उसके सौन्दर्य के कारण न होकर उसके गुणों के कारण है। इस नाटक में सुन्दरी आधुनिक नारी का प्रतिबिम्ब है जो खुलकर अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करती है तथा वह अपनी कामना पूर्ति के लिए दूसरों पर निर्भर न रहकर, स्वयं आत्मनिर्भर है। वह अपने जीवन में किसी का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं करती है और अपना रास्ता स्वयं तय करती है। इस नाटक में अन्य नारी पात्र अलका भी आधुनिक नारी की आकांक्षा को ही प्रकट करती है।

मोहन राकेश ने अपने नाटक 'आधे–अधूरे' में आधुनिक भारतीय नारी का चरित्र चित्रण किया है। इस नाटक में सावित्री प्रमुख नारी पात्र है, जिसकी आयु 40 वर्ष है, फिर भी उसके चेहरे पर यौवन की चमक है। इस नारी पात्र ने जीवन में संघर्ष के दौर में भी हार स्वीकार नहीं की है। वह एक तरफ तो अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक है और दूसरी तरफ अपने परिवार के प्रति भी अपने दायित्व को पूरा करने में सक्षम है। इस नाटक के प्रथम अंक में सावित्री के जीवन की खीज व घुटन केवल उसकी व्यक्तिगत भावनाएं नहीं हैं, बल्कि आधुनिक कामकाजी महिला के जीवन का प्रतिबिम्ब हैं। इस नाटक के पुरूष पात्र महेन्द्रनाथ हैं जो सावित्री के पति हैं। सावित्री महेन्द्रनाथ में एक सम्पूर्ण पुरूष देखना चाहती है जो असंभव है। यही कारण है कि उसकी चाहत और जिजिविषा की जगह व्यंग्य और खीज ने ले ली है। वह अपने पति को आधा–अधूरा मानती है तथा वह उससे न तो संतुष्ट है और न ही मुक्ति पा सकती है। वास्तव में सावित्री परम्परा तथा आधुनिकता के दो पाटों में पिसती रहती है, फिर भी उसमें भारतीय नारी के संस्कार शेष हैं और वह कभी भी लक्ष्मण रेखा लांघना नहीं चाहती। वह जीना चाहती है तथा अपने परिवार के प्रति भी अपने उत्तरदायित्व को पूरा करने में पीछे नहीं हटती। इस नाटक के अन्य पुरूष पात्र अशोक द्वारा जब अपनी जिम्मेवारी पूरी नहीं की जाती और वह सावित्री से नाराज रहता है तो वह विद्रोह भी कर देती है और कहती है – '

आज से मैं सिर्फ अपनी जिन्दगी देखूंगी, तुम लोग अपनी–अपनी जिन्दगी को खुद देख लेना। मेरे पास अब बहुत साल नहीं है, जीन को। पर जितने हैं, उन्हें मैं इस तरह और निभाते हुए नहीं काटूंगी। मेरे करने से जो कुछ हो सकता था इस घर का हो चुका आज तक, मेरी तरफ से यह अंत है।'[पअ]

इस नाटक में अन्य नारी पात्र सावित्री की बेटी बिन्नी है जो अपनी माँ की तरह ही सोचती है। बिन्नी को अपनी माँ से पूरा प्यार है और वह अपनी माँ के प्रति सहानुभूति रखती है। दूसरी तरफ बिन्नी की बहन किन्नी स्वयं को बेगाना महसूस करती है और वह हमेशा सोचती है कि हर व्यक्ति उससे दूर है। मोहन राकेश ने उसे एकांतवासिनी नारी के रूप में चित्रित किया है जिसकी अपनी अलग ही दुनिया है।

इस तरह मोहन राकेश ने अपने नाटकों में नारी को नये ढंए से पेश किया है जो उसके नाटकों की विशेषता मानी जा सकती है। उसके सभी नाटकों में नारी ही केन्द्रीय पात्र रही हैं। उन्होंने स्वयं भी इस बात को स्वीकार किया है कि जब भी मैंने नारीवादी दृष्टिकोण से हटकर लिखना चाहा तो कोई भी रचना प्राणवान नहीं हो सकी। उनका नारी पात्र मल्लिका का प्रेयसी रूप है जो त्याग और समपर्ण में ही अपने जीवन की सार्थकता समझती है तथा स्वयं को मिटकार अपने पति कालिदास को प्रसिद्धि के शिखर तक ले जाना चाहती है। नाटककार मोहन राकेश ने मल्लिका के त्याग को सार्थक माना है और साथ में नारी की क्षोभ भावना को भी मल्लिका के चित्र के माध्यम से प्रकट किया है। मोहन राकेश ने लिखा है – ''मैं यद्यपि तुम्हारे जीवन में नहीं रही, परन्तु मेरे जीवन में तुम सदा बने रहे हो। मैंने कभी तुम्हे अपने से दूर नहीं होने दिया। जानते हो मैंने अपना नाम खोकर एक विशेषण उपार्जित किया है और अब मैं अपनी दृष्टि में नाम नहीं केवल विशेषण हूँ।'[अ]

सारांश– इस तरह मोहन राकेश ने अपने नाटक आषाढ का एक दिन में जहाँ मल्लिका के चरित्र के माध्यम से नारी की त्याग भावना को दर्शाया है, वहीं लहरों के राजहंस नाटक में आधुनिक भारतीय मध्यवर्गीय परिवार में बिखराव, मानवीय मूल्यों के खोखलेपन व नैतिकता के खो जाने की स्थिति को सुन्दरी व नन्द के चरित्र के माध्यम से प्रकट किया है। इसी तरह

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

मोहन राकेश ने अपने नाटक आधे–अधूरे में सावित्री को आधुनिक नारी के रूप में प्रकट किया है, जिसमें जीने की चाहत शेष है तथा वह परम्परा व आधुनिकता के बीच में पिसती रहती है। यह एक संक्रमणकालीन स्थिति है जिससे आधुनिक भारतीय समाज गुजर रहा है और इसमें सर्वाधिक समस्याएं महिलाओं के साथ प्रकट होती हैं।

सन्दर्भ सूची:

[i] मोहन राकेश, आषाढ का एक दिन, पृ0 12.

[ii] मोहन राकेश, आषाढ का एक दिन, पृ0 77.

[iii] मोहन राकेश, लहरों का राजहंस, पृ0 79.

[iv] मोहन राकेश, आधे–अधूरे, पृ0 55.

[v] मोहन राकेश, आषाढ का एक दिन, पृ0 94.